

## बढ़ते कदम

ग्राम पंचायत कसेहरी बुजुर्ग ब्लॉक कैसरगंज जिला बहराइच गाँव कसेहरी बुजुर्ग जिसमें कुल घरों की संख्या है और इसकी कुल जनसंख्या 1269 है यह गाँव कैसरगंज हनुमान मंदिर से 3 कि० मी० की दूरी पर हुजूर पुर रोड के किनारे बसा है जिसमें कुल 23 घर मुस्लिम 49 घर हिन्दू रहते हैं ।

इस गाँव में एक प्राथमिक स्कूल, एक जूनियर स्कूल और एक आँगन बाड़ी केंद्र है । इसके अतिरिक्त यहाँ प्राथमिक विद्यालय में टाटा ट्रस्ट के सहयोग से संचालित परियोजना स्कूल सीख एवं प्रगति योजना के अंतर्गत ट्रस्ट कम्यूनिटी लाइवलीहुड काम कर रहा है।

यह कहानी है तरान्नुम की इनकी उम्र 13 साल है इनका नाम गाँव के जूनियर स्कूल में कक्षा 7 में लिखा है पर स्कूल कभी जाती नहीं है । जब ये 3 साल की थी तो इनकी माँ मर गयी थी और इनके अब्बू ने दूसरी शादी कर लिया था । इनके अब्बू का नाम मो० जाकिर और माँ (सौतेली ) का नाम नूरजहा है और इनका घर छप्पर और माटी का बना हुआ है॥

तरान्नुम के सगे तीन भाई हैं दो भाई बड़े और 1 छोटा और 1 सौतेली बहन है। बड़े दो भाई कान पुर में रह कर मजदूरी का काम करते हैं और अब्बू घर पर रहकर टेंट का काम करते हैं ।

तरान्नुम से हमारी मुलाकात एक साल पहले तब हुई जब मैं प्रा० वि० कसेहरी बुजुर्ग के शिक्षक रवि सर के साथ बच्चों को बुलाने गाँव में गयी थी तो हमने देखा कि वह छप्पर के नीचे बैठ कर खाना बना रही है मैं उसके पास गयी और बोली बेटा आप स्कूल नहीं चलोगी तो उसने जवाब दिया **मेडम जी हम जूनियर**

मा जायी थय तो हमने कहा बेटा अभी तो आपका खाना नहीं बना आप कब स्कूल जाओगी उसने तपाक से उत्तर दिया **जब खाना बन जायी तब** | इसके बाद जब मैं गाँव जाती वह हमेशा हमें देख छुप जाती और मैं उसके अम्मी या अब्बू से पूछती कि बिटिया स्कूल गयी तो वो लोग तुरंत बोलते हा मेडम जी गयी। एक दिन मैं बच्चों के साथ स्कूल में खेल रही थी और हमने देखा तरान्नुम बकरियों को चरा कर आ रही थी मैं दौड़ कर उसके पास गयी और बोली बेटा आज आप स्कूल नहीं गयी उसने कहा **स्कूल जब तब बकरी कौन चरायी और** नजरे चुरा कर वहाँ से भाग गयी। जब मैं वापस स्कूल आई तो बच्चों से पता चला कि वह कक्षा 5 और 6 में कभी स्कूल नहीं गयी घर पर रह कर खाना बनाती है बकरी चराती है। जब ये बात हमने स्कूल के शिक्षक वृजेश जी से पूछा तो उन्होंने ने बताया कि उसके अभिभावक बच्चे को घर के काम में लगा दिये हैं। 3,4 दिन बाद मैं फिर तरान्नुम के घर गयी सब लोग बैठकर खाना खा रहे थे हमने पूछा तरान्नुम स्कूल गयी क्या तो उसके अब्बू ने कहा कि **नाही मेडम वह अपने मौसी के घर गया हव** तो हमने पूछा कब तक आएगी उसके अब्बू ने बताया **अब का पता 2, 3, महीना तब लगिन जायी** लगभग एक महीने हो गया था हमने बच्चों से पता किया तो वह आ गयी थी दोपहर में मैं उसके घर गयी और हमने बात किया कि आप बच्चों को स्कूल क्यों नहीं भेजते तो उन्होंने बताया कि हम तो चाहते हैं की बच्चे स्कूल जाए पर स्कूल के टीचर के डर से बच्चे नहीं जाते हैं हमने जब स्कूल के शिक्षको से बात किया तो सभी ने बताया मेडम हम लोग तो कभी बच्चों को नहीं मारते हैं। फिर एक दिन मैं तरान्नुम के घर गयी समर कैंप में आने वाले बच्चों का सर्वे करने, हमने उसके अम्मी और अब्बू से बात किया और बताया कि हम लोग गर्मी की छुट्टियों में 20 दिवसीय समर कैंप करने जा रही हूँ आप लोग अपने बच्चों को भेजे और आप भी आए तो सभी ने कहा बिलकुल मेडम जी जरूर

आर्येगे तरान्नुम बोली मेडम हम हु आऊब हमने बोला तुम्हें तो जरूर आना है देखों हमने तुम्हारा नाम लिखा है वह दौड़ कर मेरे पास आई और बोली देखी मेडम और अपना नाम देख मुस्कुरा कर बोली आप भी रोज आओगी मेडम हमने हाँ मे जवाब दिया वह बोली हमारे साथ खेलिहव हमने कहा बिल्कुल पर आप रोज अपने छोटे भाई कों लेकर आना दोनों ने कहा आऊंगा ।

समर कैंप के पहले दिन मै तरान्नुम कों बुलाने गयी वह खाना बना रही थी हमे देखते ही **बोली मेडम जी खाना बनाय के आउबय** पर समर कैंप का पहला दिन बीत गया वो दोनों बच्चे नहीं आए ।दूसरे दिन मै फिर उसे बुलाने गयी हमने पूछा बेटा कल क्यों नहीं आई तो वह बोली मेडम जी खाना बनवाय मा देर होई गय रही तो हमने कहा कोई बात नही आज आप चलो वह बोली आ रही हू उसके अब्बू से हमने कहा चाचा आज आप ध्यान देकर इसे स्कूल भेज देना तो उन्होने कहा आज हम जरूर भेजेगे ।तरान्नुम की माँ हमे गुस्से मे दिखी इसलिए हमने उनसे बात करना ठीक नहीं समझा और तरान्नुम के छोटे भाई जावेद कों साथ लेकर स्कूल आ गयी। लंच का समय हों गया था सभी बच्चे खाना खाने जा रहे थे मै बैठ कर यही सोच रही थी की शायद वह आज भी नही आएगी पर थोड़ी देर बाद वह आई वह बहुत उदास दिख रही थी हमने उसे बुला कर अपने पास बैठाया और पूछा बेटा क्या हुआ उसने कहा मेडम जी माँ अब्बू से लड़त रहीन कहत रही की ये स्कूल जहीहय तव घर कय काम कोय देखि हय पीआर अब्बू कहिन तु जाव बिटिया मैडम रोज आवत है बुलवाय काम आय के कय लिहू तव हम चली आयन तो हमने उससे पूछा



आपकी माँ हमेशा इतने गुस्से में क्यों रहते हैं तो उसने कहा पता है मेडम जी वह मेरी सौतेली माँ है सगी नहीं है अब्बू कहते हैं जब मैं 3 साल की थी तभी माँ मर गयी थी इसके बाद अब्बू दूसरी शादी कर लिए पर पहले माँ मुझे मानती थी पर जबसे उनके बेटी हुई अब नहीं मानती है और घर का सारा काम हमसे ही कराती है। हमने उससे पूछा वह सर दिन क्या करती है तो उसने बताया की उनके बच्चा होने वाला है इस लिए कुछ नहीं करती। हम दोनों 10 मिनट तक अकेले एक दूसरे से बात किया फिर हमने कहा बेटा आप रोज आना आपको जब भी समय मिले यहाँ आपको कोई डाटेगा नहीं। इसके बाद हमने उससे हाथ मुँह धूल कर आने को कहा और हमने उसके बाल ठीक किए। वह सभी बच्चों के साथ बैठ कर पुस्तकालय की किताबें लेकर पलटती और दूसरी किताब ले लेती ऐसी ही 10 मिनट चला फिर वह आक्छु किताब लेकर मेरे पास आई और बैठ गयी हमने कहा आप हमें बताओ इसमें कौन-कौन है और क्या कर रहे हैं वह अक्षरों को मिला कर पढ़ने की कोशिश कर रही थी। बच्चों के साथ अंताक्षरी खेल में शामिल हुई तो वह बहुत खुश दिख रही थी सभी बच्चे घर जाने लगे वह मेरे पास आई हमने पूछा मजा आया तो उसने कहा हा बहुत मजा आया मैं भी कल गाना गाऊँगी हमने कहा पर नहा कर काजल लगा कर आना उसने हाँ में जबाब दिया और आक्छु किताब लेकर चली गयी। उसी दिन से मैं कभी उसे बुलाने नहीं गयी और वह स्वयं कोशिश करती की जल्दी से जल्दी आऊँ। वह रोज नहा कर पाउडर लगा कर आती अब तो वह बाल सभा में भी शामिल होने लगी थी पर कभी-कभी बकरियों को चारा- पानी



देने चली जाती पर कभी घर पर रुकती नहीं थी | दो तीन दिन मे वह बिना संकोच किए सभी से बात करने लगी और खेल,कविता,डांस और कक्षा- शिक्षण मे भाग लेने लगी| जब तक उसका कक्षा- शिक्षण का काम पूरा न हों जाय वह खेलने या खाना खाने जाती नही थी मेरे पास आकर बार- बार पूछती थी |

तरान्नुम किताब पढ़ने के लिए ऐसे किताब का चयन करती थी जिसमे चित्र ज्यादा और टेक्स कम हों या जिसमे कार्टून्स बने हों जैसे ढब्बू जी का धमाल, खेल मे उसे लूँ, रुमाल झपट्टा,नमस्ते जी और कैरम खेलना बहुत पसंद था| पहले वह कैरम वह खेल नही पाती थी पर देखते - देखते सीख गयी थी और खेल ने लगी थी और सबसे ज्यादा पसंद था उसे डांस करना |



एक दिन उसके अब्बू मेरे पास आकर बोले मेडम मेरे दोनों बच्चे स्कूल जाने से डरते थे अब तो वो तैयार होकर आपके आने का इंतजार करते है घर पर रुकना

नहीं चाहते है| समर कैम्प के आखिरी दिन हमने तरान्नुम से बात किया कि वह ऐसे ही नियमित अपने स्कूल जाए और पढ़ाई करे तो उसने कहा कि अब मैं रोज जाऊँगी |हमने उसके अब्बू से भी बात किया कि आप तरान्नुम के साथ स्कूल जाकर शिक्षक से बात कर ले ताकि उसका डर कम होगा यदि आपको कोई दिक्कत हो तो मैं बात कर लूँगी तो उन्होंने कहा की मैं बात कर लूँगा हमने तरान्नुम के तरफ देखा वह मुस्कुरा रही थी हमने उसके अब्बू से कहा कि आप बच्चों का ध्यान रखे



और हमने अपना फोन न0 दिया और बताया कि कोई जरूरत हो तो बात कर लीजियेगा |

समर कैम्प के 20 दिनों में तरान्नुम के अंदर बड़ा बदलाव दिखा पहले के अपेक्षा वह अब रोज नहाकर साफ - सफाई के साथ आती और आते ही दीवाल पर लगे कविता चार्ट से देख कर कविता लिखना शुरू कर देती और छोटे भाई कों भी लिखने कों कहती|

### **तरन्नुम के अब्बू व शिक्षक से बातचीत-**

दिनांक 29/07/2019 कों मैं तरन्नुम के घर जाकर उसके अब्बू से समर कैम्प से संबन्धित बात किया हमने पूछा चाचा जी आप बताए कि 20 दिन समर कैम्प के समापन के बाद आपको आपके बच्चों में किस तरह का बदलाव दिखा और समर कैम्प कों लेकर आप क्या कहना चाहेंगे ?

मेड़म जी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है हमर बेटवा जावेद रोज स्कूल जात है एककव दिन नागा नाही किहिस है और तरन्नुम कय दिक्कत ई है कि वो अभी तक सात मा चली गयी पर जूनियर मा कबहु स्कूल नाय गयी तभय कतरात थी डरत है कि मारी जाब ,, तो हमने उनसे बताया कि आप जिस दिन कहे हम आकार तरन्नुम कों साथ लेकर स्कूल चलते है और वहाँ के शिक्षक से मैं बात कर लूँगी तभी जाकिर जी ने बताया कि तरन्नुम अभी अपने खाला(मौसी) के घर गय है आवय तव आपका बताई | तरान्नुम के चाची ने बताया कि मेड़म जी हमरे मुहाल्ले के बच्चों के लिए समर कैम्प एक औषिधी की तरह काम किहिस अब एक दो कों छोड़ कर सब स्कूल जात है पहले तव सब स्कूल नाही जात रहे दिन भर घुमत रहे जब टीचर बुलावय आवत रहिन बच्चवय चुप जात रहिन अव जब आप समर कैम्प मा बुलावय आवत रहिन तव सब छोट-बड़ा आपके पीछे - पीछे चले जात रहे |

तरान्नुम के अब्बू ने बताया की हर छुट्टी मा ऐसे कार्यक्रम करना चाहिए क्योकि समर कैम्प से बच्चों के अंदर बहुत बदलाव दिखा कुछ बच्चे जों कभी नहीं जात रहे अब जात है।

इसके बाद मै वहाँ से स्कूल आ गयी और हमारे मन मै बस एक सवाल बार - बार आ रही थी कि क्या मै तरान्नुम कों स्कूल से जोड़ पाऊँगी , फिर हमने प्रा० वि० कसेहरी बुजुर्ग के प्रधानाध्यापक बृजेश जी से बात किया कि तरान्नुम कों स्कूल से जोड़ने मे मेरी मदद करे तो सर ने बताया आप जब कहे हम चलकर जूनियर स्कूल के टीचर से बात करे यदि हम लोग के प्रयास से तरान्नुम नियमित स्कूल जाने लगी तो इससे अच्छी बात और क्या होगी ।